सुभाष चन्द बोस का चरित्र-चित्रण

1. प्रखर बुद्धिसम्पन्न
2. निर्भीक तथा स्वाभिमानी
3. प्रभावशाली वक्ता
4. समाजसेवी
5. कट्टर देश-भक्त
6. सर्वप्रिय नेता
7. मानवीय गुणों के घर -
8. वीर नायक

—

(4) समाजसेवी—सुभाषचन्द्र बोस प्रारम्भ से ही समाज की सेवा करने में रुचि रखते थे। जाजपुर में महामारी का प्रकोप होते ही वे वहाँ के रोगियों की पीड़ा को दूर करने में जुट गए। इसी प्रकार बंगाल में बाढ़ आने पर वे अपने प्राणों का मोह त्यागकर बाढ़ग्रस्त व्यक्तियों की सहायता में लग गए। सुभाषचन्द्र बोस को पीड़ितों तथा दलितों का आजीवन ध्यान रहा। इस सन्दर्भ में समाजसेवी सुभाषचन्द्र बोस के लिए कवि ने लिखा है—

दु:खीजनों का कष्ट कभी वह देख नहीं सकते थे।
दलितों की सेवा करने में कभी न वह थकते थे।।

(5) कट्टर देशभक्त व अनुपम त्यागी—सुभाषचन्द्र बोस के जीवन का लक्ष्य देश की सेवा करना ही था, जिसे कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—

'रखते थे स्वदेश के प्रति भी
भक्ति न डिगने वाली।'

देश की स्वतन्त्रता के लिए ही उन्होंने अपने जीवन की आहुति दे डाली। उन्होंने राष्ट्रीयता को सदैव अपना धर्म माना, जिसकी रक्षा और पालन के लिए उन्होंने आजीवन अविवाहित रहने की ध्रुव प्रतिज्ञा की—

राष्ट्रीयता को सुभाष ने धर्म हृदय से माना।
आजीवन अविवाहित रहने का भी ध्रुव व्रत ठाना।।

कांग्रेस के आन्दोलनों में सम्मिलित होना, ओजस्वी भाषण देना, देश से भागकर आजाद हिन्द फौज का निर्माण करना आदि अनेक कार्य उनकी देशभक्ति के परिचायक हैं।

(6) सर्वप्रिय नेता—सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व में एक अद्‌भुत आकर्षण था। उनके भाषणों को सुनने के लिए लाखों व्यक्तियों की भीड़ एकत्र होती थी। कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद के चुनाव में उन्होंने गांधीजी की इच्छा के प्रतिकूल विजय प्राप्त की थी। बाद में गांधीजी की इच्छा का सम्मान रखने के लिए तथा कांग्रेस को फूट से बचाने के लिए उन्होंने अध्यक्ष-पद से त्याग पत्र दे दिया और अपनी ही विचारधारा पर आधारित 'फारवर्ड ब्लॉक' दल की स्थापना की। आजाद हिन्द फौज के जवान भूखे रहकर भी उनके संकेत पर युद्धस्थल में लड़ते थे। वस्तुतः वे जहाँ और जिस अवस्था में भी रहे, सभी व्यक्तियों ने उन्हें अपना असीम प्रेम एवं सम्मान प्रदान किया। कवि ने उनके सम्बन्ध में ठीक ही कहा है—

वह थे कोटि-कोटि हृदयों के, एक महान् विजेता।
राष्ट्र-भूमि के रत्न अलौकिक, जन-जन के प्रिय नेता।।

(7) मानवीय गुणों के आगार—सुभाषचन्द्र बोस का व्यक्तित्व अनेक गुणों का भण्डार था। उनमें सहनशीलता, धैर्य, विपत्तियों में डटे रहना, मनुष्यमात्र के प्रति प्रेम, अद्‌भुत संगठन-शक्ति, अध्ययनशीलता, नम्रता, शालीनता आदि अनेक गुण थे।

वास्तव में सुभाषचन्द्र बोस का व्यक्तित्व गांधी, जवाहरलाल, राजेन्द्रप्रसाद आदि महान् नेताओं के समान ही देदीप्यमान् था। ऐसे महापुरुष युगों के पश्चात् ही देश में जन्म लिया करते हैं।

(8) वीर नायक—सुभाषचन्द्र बोस की वीरता, उनके उत्साह और साहस से सब लोग चकित थे। अंग्रेज उनसे भयभीत थे। उन्हें कई बार जेल में बन्द किया गया। जेल से मुक्त होने पर उन्हें घर में नजरबन्द कर दिया गया, परन्तु एक मौलवी का वेश धारणकर वे एक दिन अंग्रेजों को चकमा देकर निकल भागे। काबुल के रास्ते वे जर्मनी पहुँचे और वहाँ से जापान। वहाँ सुभाष ने आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व किया। उन्होंने भारतीयों को सचेत किया और अपने भाषणों से उनमें नवीन उत्साह भर दिया। सुभाष की प्रेरणा से गठित आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेज सेना को परास्त करना आरम्भ कर दिया और अंग्रेजों के अनेक ठिकानों पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सुभाषचन्द्र बोस एक वीर नायक थे।

देश की एकता, अखण्डता और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अपने ओजस्वी चरित्र और भाषण से मुर्दों में भी प्राणों का संचार कर देनेवाले जननायक को भला किस देश के लोग भुला सकते हैं। वे भारतीयों के मनों में अनन्तकाल तक जीवित रहेंगे। उनके प्रति अपने कृतज्ञता-ज्ञापन में विनोदचन्द्र पाण्डेय ने लिखा है—

जय सुभाष का प्रतिपाद्य या उद्देश्य

उत्तर : प्रस्तुत खण्डकाव्य '**जय सुभाष**' में कवि **विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'** ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के चरित्र को अपना प्रतिपाद्य विषय बनाया है। इसलिए लेखक ने **खण्डकाव्य का नामकरण** भी उन्हीं के नाम पर किया है, जो सर्वथा उचित ही है। नेताजी का जीवन-चरित्र; स्वाभिमान, राष्ट्रीयता, देशप्रेम, स्वतन्त्रता आदि उदात्त भावों का अद्‌भुत उदाहरण है। वास्तव में ये गुण ही सुभाष के अनुपम आदर्श थे। कवि का उद्देश्य उनके चरित्र-चित्रण द्वारा इन्हीं उदात्त गुणों की प्रेरणा देना है; जिससे देश की युवा पीढ़ी देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता, भावात्मक एकता, अन्तर्राष्ट्रीय चेतना, वैज्ञानिक विकासात्मक प्रवृत्ति एवं उच्च मानवीय आदर्शों के प्रति निष्ठावान् हो सके।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व में प्रतिभा-सम्पन्नता, अनुपम त्याग, स्वाभिमान, स्वतन्त्रता-प्रेम, आत्म-बलिदान तथा उनके व्यक्तित्व सम्बन्धी ओज का जो प्रकाश था, वह युग-युग तक किसी समाज की प्रेरणा का स्रोत बनने में सक्षम है। कवि ने सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए उनके इन्हीं गुणों को प्रकाशित किया है, जिससे देश की युवा पीढ़ी प्रेरणा प्राप्त कर सके। खण्डकाव्य के इन्हीं गुणों ने हमें सबसे अधिक प्रभावित किया है।